बोलू के मामा

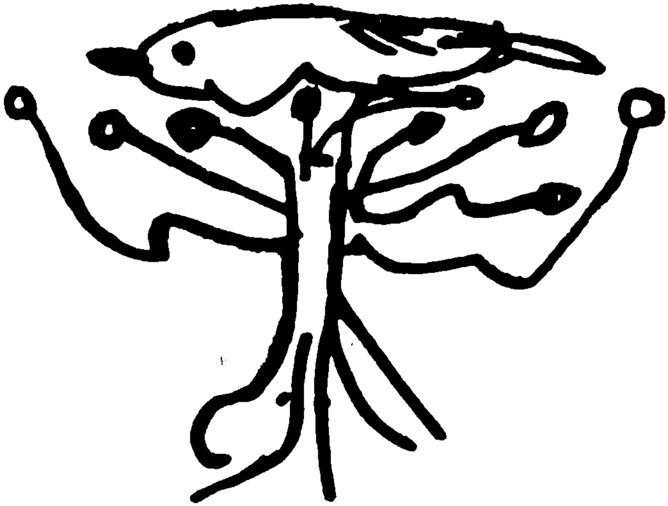
रमेशचन्द्र शाह



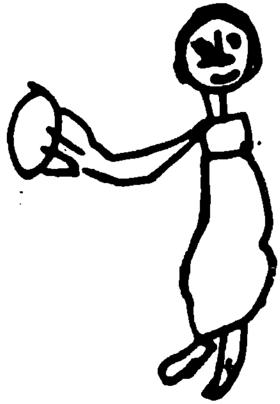
गोलू के मामा



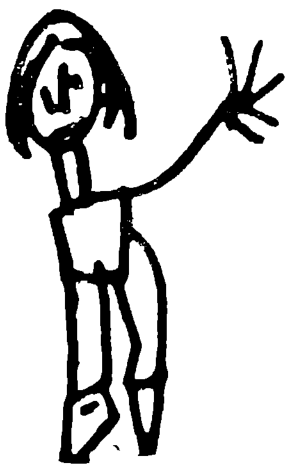
रमेश चन्द्र शाह

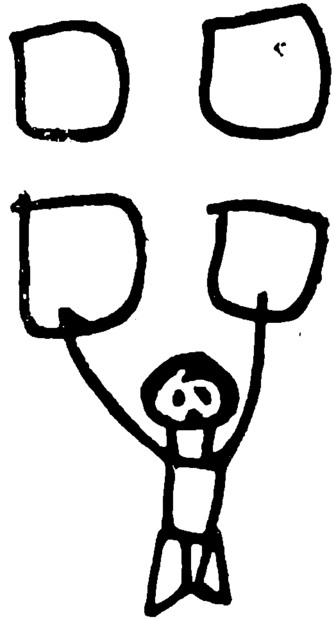


मूल्य : सात रुपये □ संस्करण : १९८४ □ आवरण और अन्तःसज्जा : राजुला शाह □ © रमेशचन्द्र शाह □ प्रकाशक : अक्षय प्रकाशन, नई दिल्ली □ वितरक : पूर्वोदय प्रकाशन, ७/८ दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ □ मुद्रक : **अग्रवाल प्रिंटर्स, नई दिल्ली-११००२८**

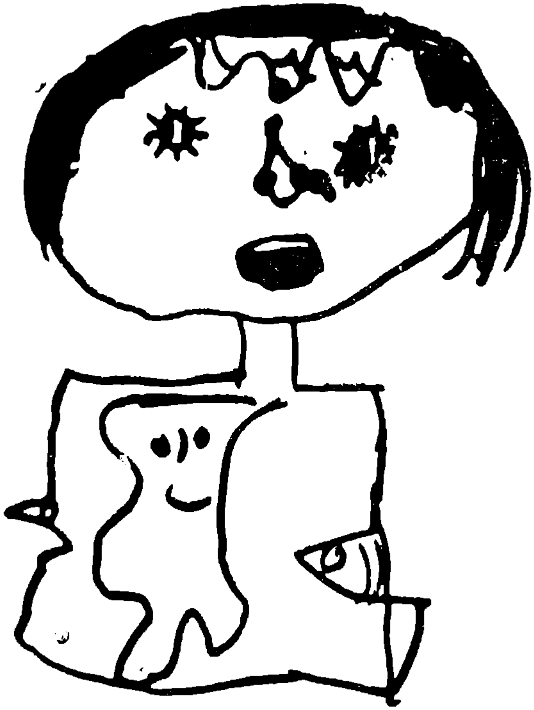


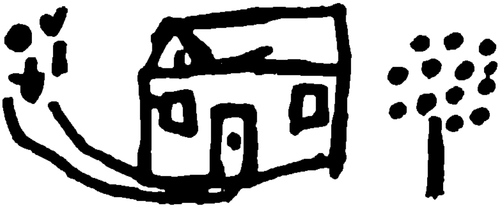
टीकू और
कक्कू के लिए





क्रम





॥ कहानी ॥

बहुत दिनों की बात है बच्चो
बूढ़ा एक शहर था
उसके बीचोबीच हमारा
फटा-पुराना घर था।

फटा-पुराना घर था लेकिन
हम सब नये-नये थे
अल्लादिया चचा लड़कों के
नेता नये-नये थे।

आशा भड़भूंजे के घर से
लगा हुआ जो घर था
अल्लादिया चचा ने उसमें
डाला डेरा भर था।

सुबह-शाम वे साथ हमारे
ऊधम खूब मचाते
नये एक-से-एक खेल वे
रोज हमें सिखलाते।

उनके हाथों में जादू था
क्या-क्या नहीं बनाते
अल्लादिया खिलौनेवाले
थे वे यूं कहलाते।

पर उनके हाथों से बढ़कर
हम थे उनको प्यारे
बावन बच्चों का कुटुंब था
सबके वे रखवारे।

हमें खिलौने बेच हमारे
ही पैसों की आई
खुश होते थे चचा बहुत ही
हमको खिला मिठाई।

पटिया पर जम जाते आकर
लगा शहर की फेरी
किस्से-कहानियों की फिर तो
लगती जाती ढेरी।

दुनिया बदल रही है बच्चो!
कभी-कभी वे कहते
"दुनिया बदल गयी है बच्चो
मेरे रहते - रहते।"

बावन बच्चों के चाचा की
सालगिरह जब आई
पहुंचे उन्हें बधाई देने
बनारसी हलवाई

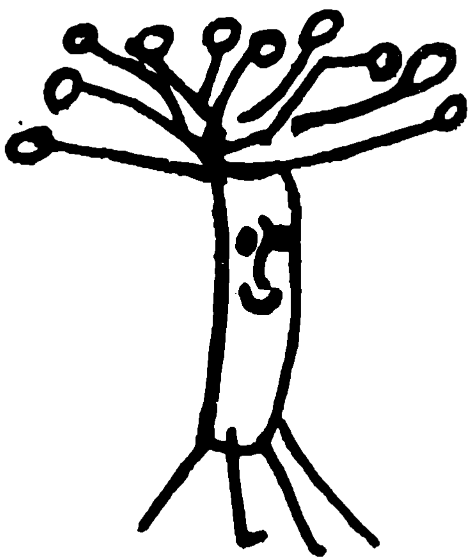
आगे-आगे बहन जलेबी
पीछे लड्डू भाई।
और बीच में रसगुल्लों के
बैठी रबड़ी माई।

कितनी बार किया मुंह मीठा
हमने उनका अपना
अब तो हम खुद बुढ़ा गये हैं
देख रहे हैं सपना।

बच्चो! अल्लादिया चचा के
किस्से तो इतने हैं
दुनिया भर के बागीचों में
फूल खिले जितने हैं।

कहां-कहां तक उन्हें गिनायें
याद आ रही नानी
खत्म नहीं होती थी जिसकी
कोई कभी कहानी।

●





॥ ना धिन धिन्ना ॥

ना धिन धिन्ना
पढ़ते हैं मुन्ना
ता ता थैया
आ जा भैया
ता थई ता थई
ना भई ना भई
धिरकिट धा तू
सिर मत खा तू
धीं तृक धीना
झटपट रीना
धा - धा - धा - धा
अब क्या होगा
धिरकिट धिरकिट
गिरगिट ! गिरकिट !

धा धीना धीना धीना
वो देखो दीनू बीना
धा धीना नाती नक
भैया गया है थक
धिन-धिन्ना धा धिनक
इमली गई है पक
ना तिन्ना तिरकिट तान
कहना तू मेरा मान

।। ना भई ना ।।

खाओ तो भी पछताओ
छोड़ो तो भी पछताओ
लगा दिया मिट्टी के मोल
आ जाओ भई आ जाओ ।

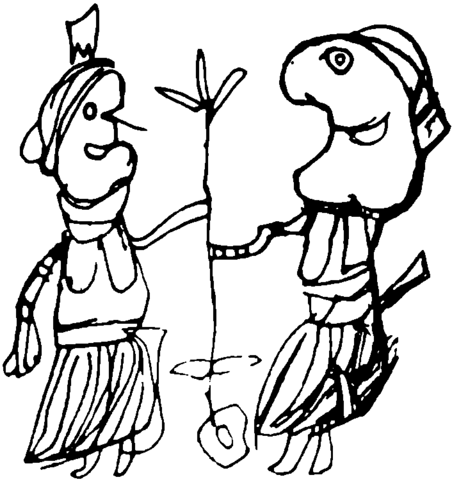


"ना भई ना, ना भई ना"
"हां भई हां, हां भई हां"
ऐसी गाजर मिले कहाँ
एक रूपे• में पांच किलो
लगा दिया भई आ जाओ ।

"ना भई ना, ना भई ना"
"हां भई हां, हां भई हां"

ककड़ी ले लो नरम-नरम
हलवा खा लो गरम-गरम
इसके आगे नारंगी
भी लगती फीकी-फीकी
दे जाओ मिट्टी का दाम
ले जाओ किशमिश-बादाम
मेवा खाओ, आ जाओ
फुरसत से फिर पछताओ ।

"ना भई ना, ना भई ना ।"
"हां भई हां, हां भई हां ।"



॥ भरी दोपहर ॥

भरी दोपहर चिल्लाते हैं
दो-दो ठेलेवाले।
गरमी की सौगात आ गयी
खाना जिसको खा ले।

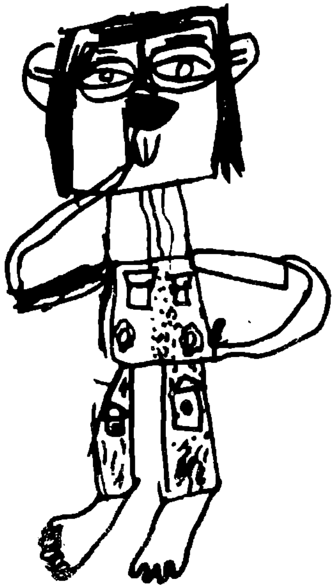
"खुशबू ऐसी, घर भर जाये
रंग देख सोना शरमाये।
क्या बढ़िया मेरा खरबूजा
मीठा जैसे लेमनजूस।"

"खरबूजे को मार भगाये
ककड़ी को भी मजा चखाये।
ये शरबत का घड़ा है बच्चो
यहां न आये, जो पछताये।"

"बजा-बजा तू चाहे जितना
अपने तरबूजों का ढोल।
कौन खरीदेगा ये तेरे
फीके कद्दू गोल-मटोल।
बच्चे तो मुझसे ही लेंगे
मेरा खरबूजा अनमोल।"

"खरबूजे का चचा यहां है,
आओ बच्चो, आओ।
मेरे भीतर आइसक्रीम है,
खाओ और खिलाओ।

"दस-पैसे की बरफ लगेगी,
मजा देखना फिर तुम।
'ठेलेवाले !···ठेलेवाले !'
रोज बुलाओगे तुम।"



।। एक पहेली ।।

टीकू को भटकानेवाले
कक्कू को झपकानेवाले
हरी मटर की आंखों वाले
लाल टमाटर गालोंवाले

बूझो कौन ? बूझो कौन ?

"बाबा, ऐसी कठिन पहेली
नहीं बता सकते हम
बाबू दफ्तर से आ जायें,
तभी पूछ लेंगे हम।"

अच्छा, तुम कुछ मत बतलाओ
तुम तो यह अमरूद उड़ाओ
पकी हरी अमरूदी धूप
मीठी लगती दिन भर खूब

हम पालक के ठेलोंवाले
महंगे-महंगे केलोंवाले

तुम्हें बहुत भटकानेवाले
दिन भर धूल खिलानेवाले
फूलों को मुरझानेवाले
पत्ते खूब गिरानेवाले

बूझो कौन ? बूझो कौन ?

"बाबा, ऐसी कठिन पहेली
नहीं बूझ सकते हम
बाबू दफ्तर से आ जायें
तभी पूछ लेंगे हम।"

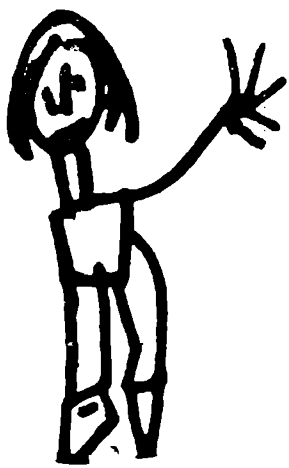
चाहे जिसके दरवाजों पर
लगा दिया करते हम ताले
गाय-बैल सब हमें सौंप कर
ऊंघा करते हैं रखवाले

भरी दोपहर धूप तपाते
घर भर को छत पर ले आते

हम कक्कू की आँखोंवाले
नील-नीलो पाँखोंवाले
उड़ जाते हम बैठे ठाले
बाबा जी के बालोंवाले

ना हम बूढ़े, ना हम बच्चे
ना हम झूठे, ना हम सच्चे

बोलो कक्कू, बोलो टीकू
क्यों हो मौन? क्यों हो मौन?
'जाड़े के दिन,' एक पहेली
बूझे कौन? बूझे कौन?



।। गोलू के मामा ।।

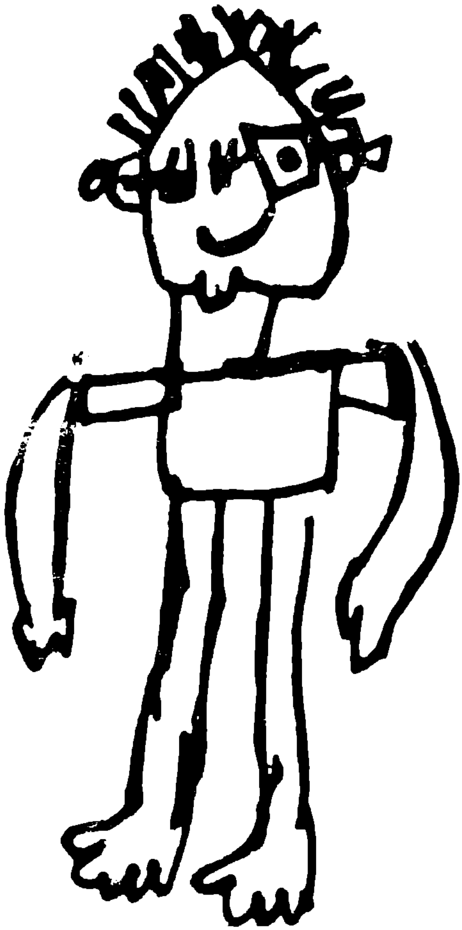
गोलू के मामा आये
सब देख रहे मुंह बाये।

मुंह उनका है गुब्बारा
था किसने उन्हें पुकारा,
नारंगी उनको भाये
गोलू के मामा आये।

वे पूरब से हैं आते
गोलू से गप्प लड़ाते
हौले से उसे सुला कर
फिर पच्छिम को उड़ जाते।

सच बात अगर मैं बोलूं
तो पोल पुरानी खोलूं.

सूरज का फटा पजामा
सिलते गोलू के मामा।

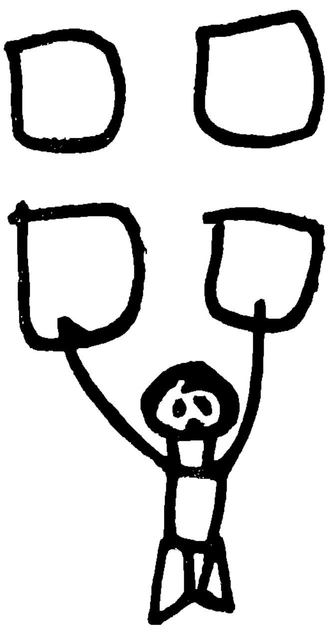


पर जाने क्या जादू है
रहते हैं सब पर छाये,
सब देख रहे मुँह बाये
गोलू के मामा आये।

ये बड़े दिनों में आये
झोले में हैं कुछ लाये।
हमको तो पता चले तब
जब गोल हमें खिलाये।

लो दिखा-दिखा नारंगी
बन जाते एक बताशा,
यूं सबको देते झांसा
करते ये खूब तमाशा।

हर पंद्रह दिन में कैसे
आ जाते बिना बुलाये,
मैं देख रहा मुंह बाये
गोलू के मामा आये।





।। काली छत पर··· ।।

काली छत पर पसरे काली डालोंवाले नीम के
नीचे दोपहरी में ऐसे झोंके लगे अफीम के।

एक फिसलपट्टी उग आयी आसमान के छोर पर
दो बच्चे, फिर जाने कितने उमड़े उनके शोर पर,
माइक लगाये रिक्शे दो-दो झपटे बड़े उतावले
गोल बांध कर पक्षी दौड़े उनके पीछे बावले।

अरे-अरे, यह तो सारा ही शहर धुएं-सा उठ रहा
अरे-अरे, यह तो पहाड़ ही चील सरीखा उड़ रहा,
छोटू के घर की फुलवारी उड़ी अचानक फुर्र से
बाबू के आंगन की इमली लगी सरकने सुर्र से,
अरे बाप रे! यह तो मेरे हाथ-पांव ही जा रहे
कैसे इन्हें बुलाऊं मेरे दिल-दिमाग चकरा रहे।

कहां आ गया मैं ?—यह कैसी फैली है अलकापुरी
लो यह मैं तो उड़ा जा रहा—हल्का, जैसे पाँखुरी,
यक्षिणियाँ ही यक्षिणियाँ हैं छत पर बाल सुखा रहीं
मुझे घेर लेने को सबकी सब बाँहें फैला रहीं।

वाह-वाह ! यह तो पतंग है—रंगबिरंगी, नाचती
आसमान में देखो कैसी लट्टू जैसी भागती,
और हाथ में डोर है मेरे, खींचूं इसको जोर से
तो समेट लूं चक्कर खाती दुनिया चारों ओर से।

अररर-ररररर गिरा जा रहा हूँ मैं, कोई थाम ले !
यह क्या ? मुझे पुकार रहा है कोई मेरा नाम ले,
पानी का पर्दा-सा मेरे आसपास कुछ हिल रहा ?
कुछ उल्लू, कुछ गदहे जैसा चेहरा उसमें खिल रहा।

हां, अब समझा—पंख फड़फड़ाते पेड़ों की झील में
लटका हुआ पड़ा मैं औंधा, कपड़ा जैसे कील में,
पता नहीं, यह किसका चेहरा बार-बार दिखला रहा
मुझको जो मुंह बिरा अचानक फिर-फिर गुम हो जा रहा।

इतने में वह झील उड़ गयी, कपड़ा मुझ पर गिर पड़ा
काला कौवा एक अचानक सिर पै मेरे पिल पड़ा,
आँखें खुल गयीं देखा—मेरे घर में, बूढ़े नीम जी,
काँव-काँव कर पूछ रहे हैं 'कैसी रही अफीमची जी ?'



।। कक्कू ।।

नाम है उसका कक्कू ।

कक्कू माने कोयल होता
लेकिन यह तो दिनभर रोता
इसीलिए हम इसे चिढ़ाते
कहते इसको सक्कू ।

नाम है उसका कक्कू ।।

कोयल, माने मिसरी जैसी
मीठी जिसकी बोली
यह तो जाता भड़क करो जब
इससे तनिक ठिठोली
इसीलिए तो कभी-कभी हम
कहते इसको भक्कू

नाम है उसका कक्कू ।।

कक्कू वह जो गाना गाए
बात-बात में जो चिढ़ जाए
रहता मुंह जो सदा फुलाए
गाना जिसको जरा न आए
ऐसे झगड़ालू को अब से
क्यों न कहें हम झक्कू

नाम है उसका कक्कू ।।



।। बादल ।।

आसमान हो आँगन जिसका
कमी उसे क्या खेल की ?
करे सवारी रोज हवा की
पड़ी उसे क्या रेल की ?

सूरज जिसका गड़ेरिया हो
क्या कहने उस भेड़ के ?
पानी के पत्ते हों जिसके
क्या कहने उस पेड़ के ?

आग और पानी को देखो
कैसा प्यारा मेल है
कहां छिपा है जादूगर वह
जिसका सारा खेल है ?

●



॥ बूझ पहेली मोरी ॥

झूले पर मैं तुझे झुलाऊँ
खूब सुनाऊँ लोरी।
मेहारानी बड़ी सयानी
बूझ पहेली मोरी।

सूरज दादा यूं तो हमको
खुद ही पास बुलाते,
पता नहीं फिर हमें देख वे
भीतर क्यों छिप जाते।

मिल जाते हैं लेकिन हमको
जब भी चन्दा मामा
सिलवा देते फौरन हमको
कुरता और पजामा।

हम हैं उनके हिरन, हाँकते
हम ही उनका ताँगा।
मना नहीं करते वे हमको
जिसने जो भी माँगा।

बादल के तो नहीं, मगर हम
सूरज के बच्चे हैं।
पक जाने पर खूब टपकते
अभी जरा कच्चे है।

●

॥ बंटी ॥

बंटी बड़ी सयानी है
गुड़ियों की वह रानी है
मगर दूध पीने में करती
बेहद आनाकानी है।

रक्खा हुआ गिलास अभी तक
मक्खी गिरी मलाई में
कान मरोड़ दिए जीजी ने
रूठी पड़ी चटाई में।

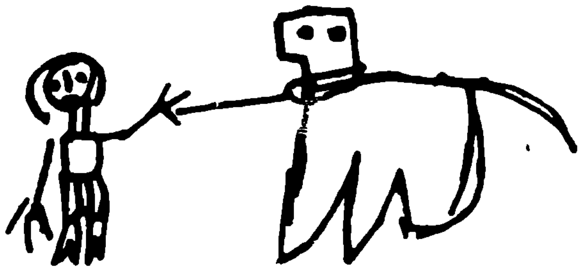
बेचारी जीजी अब अपने
गुस्से पर पछताई
लगी हिलाने हलवा जीजी
झट से चढ़ा कढ़ाई।

लो हलवा तैयार है
मक्खी भी हुश्यार है
उँगली देखी भाग गई
बंटी देखो जाग गई।



।। एक दिन की बात ।।

आओ बच्चो तुम्हें सुनाएँ बढ़िया एक कहानी
कान खोल के सुन लो भइया कर लो याद ज़बानी।
सुनते-सुनते तुममें से जो पहले सो जाएगा
उसको सबसे बढ़िया सपना आज रात आएगा।



जैसे एक बड़े बरगद पर मचा हुआ हो रेला;
ऊपर नीचे सब डालों पर हो चिड़ियों का मेला,
वैसे ही बस एक शाम को बच्चे दुनिया भर के
हुए इकट्ठा सभी छतों पर अपनी-अपनी चढ़ के।

एक बड़े आँगन में जैसे बड़ा गोल घेरा हो;
बारी-बारी से हर बच्चा लगा रहा फेरा हो;
वैसे ही चहचहा रहे वे सबके सब आपस में
सबको सबकी बात सुनाई देती थी हाँ सच में।

दिल्ली का बण्टू जा बैठा कोलम्बो से सटकर;
तिब्बत का चिंग-लू जा कूदा अमरीका की छत पर;
किलकारी से गूंज रहा था आसमान तक उस दिन;
किसी बड़े को पता नहीं था इस किस्से का लेकिन
हम थे इसका मजा ले रहे बैठे हवामहल में।
परियाँ ही परियाँ दिखती थीं हमको जल में थल में।

अल्मोड़े का रामू बोला बियना की यूता से
मैं गिनता हूँ इधर यहाँ तुम गिन लो उधर वहाँ से;
मुझको नानी ने बतलाया हम-तुम मिलकर सारे
उतने ही होंगे जितने हैं आसमान में तारे।

यूता बोली रामू भय्या, गिनके क्या करना है?
हमें इन्हें बस तोड़-तोड़ कर जेबों में भरना है।
आसमान है पेड़ सेब का, रोज़ रात फलता है
कहती मेरी दादी लेकिन हमें कहाँ मिलता है।

यह सुनकर चिंग-लू ने ज्योंही डण्डा एक घुमाया
आसमान सच पेड़ सरीखा नीचे को झुक आया।
चमकीले सेबों की फिर तो ऐसी मची टपाटप
गिनना भूल उन्हें सब गुड्डे करने लगे गपागप।

देख-देख कर मन मेरा भी था बेहद ललचाया।
एक सेब गपने को ज्योंही मैंने हाथ बढ़ाया
बड़े जोर से हिला अचानक हवामहल का खम्भा
गोल-गोल दुनिया से टपका लम्बा एक अचम्भा।

उस दिन मैं जो गिरा अचानक खा करके वह झटका
गिरता चला गया नौ दिन तक, आज अभी हूँ अटका।।



।। अब तो बूझो ।।

नहीं घोंसला उसमें कोई
फिर भी वह चिड़ियों का घर है;
पानी जैसा लहराता पर
ना वह मछली, न ही लहर है।

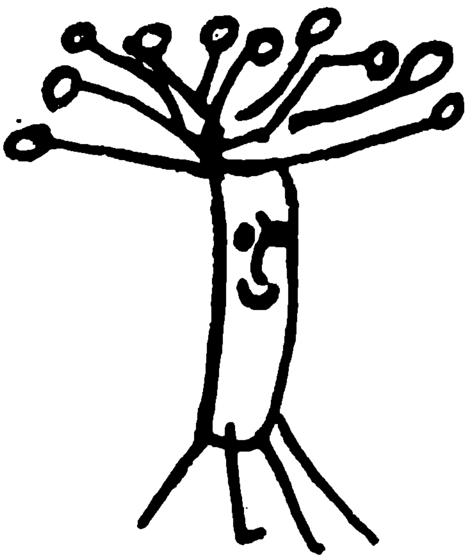
एक टाँग पर खड़ा तपस्वी
बगुला वह तो नहीं मगर है;
हरे-भरे छाते सा लेकिन
उसको नहीं चोर का डर है।

सिवा हवा के और किसी से
नहीं भूलकर भी बतियाता;
फिर भी उसका धरती के संग
हम सबसे बढ़कर है नाता।

कुछ पूछा तो हिला दिया सर
वरना चुप रहता दिन भर है;
मगर शाम को शोर मचाता
मानो कोई बड़ा शहर है।

एक 'पेड़' में जितने पत्ते
उतने उसके कपड़े-लत्ते;
अब तो बूझो प्यारे बच्चो
इतना भी तुम नहीं समझते।

●



जैनेन्द्र की श्रेष्ठ रचनाएं

उपन्यास

अनाम स्वामी ● कल्याणी ● मुक्तिबोध ● सुनीता ● जयवर्धन ● सुखदा
अनन्तर ● परख ● व्यतीत ● यामा ● विवर्त ● दशार्क

कहानी संग्रह

जैनेन्द्र की कहानियां (दस भागों में) ● जैनेन्द्र की सर्वश्रेष्ठ कहानियां
प्रेम में भगवान (मूल तालसतोय)

नाटक

पाप और प्रकाश ● मग्दालिनी

संस्मरण : ललित निबंध

मेरे भटकाव ● काश्मीर की वह यात्रा ● ये और वे ● सोच विचार ● परिप्रेक्ष
इतस्ततः ● पूर्वोदय ● मंथन

साहित्य, आलोचना और संदर्भ-ग्रन्थ

साहित्य और संस्कृति ● प्रेमचन्द : एक कृती व्यक्तित्व ● साहित्य का श्रेय और प्रेय
कहानी : अनुभव और शिल्प ● समय समस्या और सिद्धांत ● समय और हम
प्रेम और विवाह ● नारी ● काम प्रेम परिवार ● अकाल पुरुष गांधी
प्रश्न और प्रश्न ● राष्ट्र और राज्य ● वृत्त विहार (तीन भागों में)
शिक्षा और संस्कृति ● क्या अभी भविष्य है ?

सरस, सचित्र, बाल व किशोर साहित्य

अपना-पराया ● इनाम ● जंगल की आवाज ● खेल ● किसका रुपया
लाल सरोवर ● नारद का निवेदन ● पढ़ाई ● रामू की दादी ● सुन्दरिया
तमाशा ● वह बेचारा ● प्रेम में भगवान ● दो साथी ● मूरखराज ● बाहुबली
धर्मपुत्र ● देर हो अंधेर नहीं ● जीवन मूल ● चिड़िया की बच्ची ● तीन जोगी
गांधी कुछ स्मृतियाँ ● हमसे सयाने बालक ● खोखला ढोल

पूर्वोदय प्रकाशन
दरियागंज, नई दिल्ली -११०००२